चोल कालीन कला और साहित्य

कला एंव साहित्य के क्षेत्र में चोल वंश का विशिष्ट स्थान रहा है । चोल वंश के शासक महान निर्माता रहें है । चोल कला के अन्तर्गत स्थापत्य मूर्तिकला और चित्र कला का खुब विकास हुआ चोल स्थापत्य की प्रंशसा करते हुए फर्ग्यूसन ने कहा है कि चोल कालीन कारीगर राक्षस की तरह सोचते थे एंव जौहरी की तरह तराशते थे । साहित्य के क्षेत्र में भी खूब विकास हुआ चोल वंश का शासन काल तामिल साहित्य के लिए स्वर्णयुग कहा जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

कला

- स्थापत्य कला
- मूर्तिकला
- चित्रकला

स्थापत्य कला

चोलो ने द्रविड़ शैली मे अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया आरम्भिक चोल मंदिर छोटे थे परन्तु बाद में विशाल एंव भव्य बनाया गया ।

चोलकालिन मंदिरो की निम्न विशेषताएं थी –

1. चोल कालीन मंदिर भव्य एंव नक्काशी होते थे ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

2. चोल मंदिरों में विस्तृत प्रांगण होता था ।

3. चोलकालीन मंदिरों में विशाल विमान तथा ऊँचे अलंकृत गोपुरम् का निर्माण करवाया गया था ।

4. नरतमलै का विजय चोलेश्वर मंदिर तथा श्रीनिवासनल्लूर कोरणुनाथ के मंदिर गर्भगृहयुक्त था

5. परिदिक्षणा पथ भी देखने को मिलता है ।

पर्सी ब्राउन ने राजराजेश्वर /वृहदेश्वर मंदिर के विमान को भारतीय वस्तुकला का निकष माना है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

राजेन्द्र चोल द्वारा गंगैकोडचोलपुरम में बनवाई गई मंदिर कला का विशिष्ट उदाहरण है । इसका शिखर 150 फिट इसमें 8 मंजिला विमान है । स्तभं अंलकृत है और बाहरी दीवारों पर भी मूर्तियां बनी है ।

इसके अलावें चोल स्थापत्य कला का अन्य उदाहरण है –दारासुरम एरावतेश्वर का मंदिर , कुंलोतुंग द्वितीय का कम्पलेश्वर का मंदिर इत्यादि ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

मूर्तिकला

चोल काल में मूर्तिकला का भी खूब विकास हुआ । मंदिरों की सजावट में मूर्तियो पर विशेष ध्यान दिया गया । मंदिरो ं में देवी–देवताओं के अलावें राजा–रानियों को भी खूब मूर्तियां बनाई गई । मूर्तिकला चोल वंश के राजकीय धर्म से प्रभावित था परिणामतः शैव की मूर्ति अधिक बनाई गई ।

चोलकाल में ज्यादातर मूर्तियां कांस्य धातु में बनाया गया । सबसे श्रेष्ठ शिव के नृत्य मुद्म मे बनी नटराज की मूर्तिया बनायी गई थी परन्तु चोल शासन के दौरान ही यह अपने चरम पर पहॅची ।

तिरूचिरापल्ली जिला में शिव के अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति पायी गई है । इसमें स्त्री एंव पूरूष को एक ही मूर्ति में बड़ी खुबसूरती से उभारा गया है । तंजौर के मंदिर मे प्रांतक द्वितीय और राजेन्द्र चोल की प्रतिमा स्थापत्य की गई जो मूर्तिकला का अनुष्ठा उदाहरण है ं

चित्रकला

चोलकाल में चित्रकला का भी खूब विकास हुआ इस काल में मंदिरों एंव महलों को सजाने के लिए दीवारों पर सुदंर–सुंदर चित्र उकेरा गया । मंदिर के स्तभों पर भी मानव जीवन के सुंदर चित्रण किया गया। चित्रकला भी ज्यादातर धर्म से प्रभावित था । चित्रकला का अनुपम उदाहरण राक्षस को बध करते हुए दूर्गा का चित्र बनाया गया है इसके अलावें वृहदेश्वर के

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

मंदिर मे राजराज के परिवार शिव की पूजा करते हुए चित्र बनाया गया है । इसमें खुबसुरत नक्काशी के प्रमाण मिलते है ।

तंजौर के मंदिर में बने चित्रों की समानता बहुत हद तक अजन्ता के भित्ति चित्रों से की जा सकती है । चोल काल में कला अनुठा उदाहरण चोलकालीन नगर , झील , तालाब इत्यादि भी थे । राजेन्द्र प्रथम ने अपनी राजधानी गंगईकोण्डचोलपुरम् के निकट एक विशाल झील का निर्माण करवाया जिसमें कोलेरून और बेल्लूर नदियों का जल भरा गया था और उसमें अनेक नहरें निकली गयी ।

चोलकालीन साहित्य

OUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

चोल काल में तमिल साहित्य के लिए स्वर्ण युग कहा जाता है । इस समय अनेक काव्य ग्रंथो की रचना की गई । तमिल लेखकों मे सबसे प्रसिद्ध जयन्गोन्दार था जो कुलोतुंग प्रथम के दरबारी कवि था । उन्होने कलिंगतुपणि नामक ग्रंथ की रचना की । कुलोतुंग के कलिंग रामायण अथवा रामावतारत् की रचना की यह तमिल साहित्य का महाकाव्य है । इसकी कथा वाल्मीकि रामायण की कथा से मिलती जुलती है ।

जैन विद्वान तिरूरकदेव ने जीवन–चिन्तामणि तोला मोक्ति ने शुल मणि जयगोदार ने कलिंगन्तुप्पाणि और कम्बन ने रामावतारम् नामक ग्रंथो की रचना की । बौद्ध विद्वान रसोलियम और एक अन्य बौद्ध विद्वान ने कुण्डल

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

केशि तथा कल्लद्रम नामक ग्रंथ लिखें । प्रसिद्ध विद्वान पुगलेन्द और दण्डिन भी इसी चोल वंश में हुए । वेंकट माधव ने परान्तक प्रथम के समय ऋगवेद पर अपना भाष्य लिखा । राजराज द्वितीय के समय में केशव स्वामिन ने नानार्थार्णव नामक कोष का संपादन किया ।

चोल शासक भी तमिल विद्वान थे । वीरराजेन्द्र भी एक प्रसिद्ध विद्वान था ।

निष्कर्ष

उपर्युक्त वर्णनों के आधार पर कह सकते है कि चोल काल में कला के क्षेत्र में अद्भूत विकास हुआ । द्रविड़ शैली में सैकड़ों मंदिरों का चोल नरेशो ने इस क्षेत्र मे असीम दिलचस्पी दिखाए । उतना ही उत्थान तमिल साहित्यों के क्षेत्र में हुआ । इस दौरान कई तामिल साहित्यों की रचना हुई । कई भारतीय ग्रंथो पर टिका लिखा गया। तमिल भाषा के अलावें संस्कृत भाषा की भी उत्थान हुआ ।

CAREER FOUNDATION
जनन राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

प्रश्नः– चोलकालिन कला एंव साहित्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें ।

प्रश्न :– चोलकालीन स्थापत्य एंव मूर्तिकला की विशेषताओं को बताइए ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का